RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-05
Issue-11
November-2020

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]
DOI: https://doi.org/10.31305/rrijm.2020.v05.i11.010

निरूक्त में दैवतकाण्डगत पदों का समीक्षात्मक अध्ययन

अर्पिता सिंह

शोध छात्रा, संस्कृत विभाग वीर बहादुर सिंह पूर्वांञ्चल विश्वविद्यालय, जौनपुर

भूमिका

भारतीय संस्कृति के इतिहास में वेदों का स्थान अत्यन्त गौरवपूर्ण है। सभी जगह "वेद प्रमाण है" ऐसा मत समान रूप से अंगीकृत किया जाता है। सभी मतावलम्बी अपने मत को वेदोक्त प्रमाण द्वारा पुष्टता को प्राप्त कर अपने व अपनी कृति को धन्य मानते है। इस विषय में न केवल भारतीय अपितु विदेशी भी श्रद्धावान दिखते हैं।

हम भारतीयों का समस्त साहित्य वेद आधारित सदैव महत्व को प्राप्त करता है। "महर्षि बादरायण" इसलिए ही वेदव्यास की सत्ता को प्राप्त किये, क्योंकि उन्होंने वेदों को ही अठ्ठारह पुराण के रूप में रचा।

"मीमांसाशास्त्र" में पुराणों का अत्यन्त महत्व वर्णित है। विश्व का आदि ग्रन्थ भारतीय धर्म का रमणीय कल्पद्रुम, आर्य संस्कृति का प्राणभूत वेद है। वेदों का रूप रहस्य, स्वरूप–सिद्धान्त आदि का ज्ञान भारतीयों के लिए परमावश्यक व नितान्त अपेक्षित है।

वैदिक साहित्य के चारों भाग वेदों के ही अंगभूत है। यद्यपि साहित्य शब्द वाङ्मय अर्थ में प्रयुक्त होता है जिसके लिए "लिटेरचर" वैदेशिक शब्द प्रयोग किया गया है। तथापि यहॉ वेद शब्द का प्रयोग मन्त्र ब्राह्मण के लिए किया गया है। जैसा कि आपस्तम्ब में कहा गया है कि "मन्त्रब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम्।" वेद शब्द विद् धातु से घञ् प्रत्यय करने पर निष्पन्न होता है। वेद शब्द का अर्थ ज्ञान है अर्थात् मन्त्र और ब्राह्मण का सामूहिक नाम वेद है। जिससे यज्ञ यागादि का अनुष्ठान किया जाता है। देवताओं की स्तुति का विधान जहॉ लिखा है वह मनन मन्त्र कहलाता है। ब्राह्मण पद "ग्रन्थ" विशेष का वाचक है। यज्ञादिकों की विविध क्रिया–कलाप प्रातिपादित ग्रन्थ ब्राह्मण इस पद का अर्थ है "तर्थज्ञं विस्तारो वितानो वा यज्ञ इति ।" प्रत्येक वेद को तीन भागों में विभक्त किया गया है। – प्रथम भाग ब्राह्मण, द्वितीय भाग आरण्यक, तृतीय भाग उपनिषद कहा जाता है।

वेद स्वरूप भेद से तीन प्रकार का होता है:–

ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद। जहॉ अर्थ के वशीभूत पाद व्यवस्था है उन छन्दोबद्ध मन्त्रों का नाम ऋक् है अर्थात् ऋचाओं का समूह ही ऋग्वेद पद से जाना जाता है। यजु पद यज् धातु से उमि प्रत्यय करने पर प्राप्त होता है– गद्यात्मकं यजुः अनियताक्षरावसानं यजुः।

वेदों में निरूक्तः–

वेदों के ज्ञान के लिए तथा उसके कर्मकाण्ड के प्रतिपादन में जो अन्य उपयोगी शास्त्र है वो भी वेद के अंग है। अंग शब्द का व्युत्पत्यर्थ उपकारक है "अंग्यन्ते ज्ञायन्ते अमीभिरिति अङ्गानि।" वेद के पुरूष के षड् अंग निम्नवत् हैं –

"छन्दः पादौ तु वेदस्य, हस्तौ कल्पोऽथ, पठ्यते,
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरूक्तं श्रोत्रमुच्यते।
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्,
तस्मात् साङ्मधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते।।"

(पाणिनीय शिक्षा)

अर्थात् छन्द वेद के पैर है, कल्प को हस्त कहा जाता है। ज्योतिष को चक्षु, निरूक्त को श्रोत्र, शिक्षा को घ्राण और व्याकरण को मुख कहा गया।

इन षड्वेदांगों में निरूक्त को वेद पुरूष का श्रोत्ररूप अङ्ग माना जाता है।

'निरूक्त' शब्द की व्याख्या सायणाचार्य के अनुसार यह है– "अर्थाऽवबोधे निरेपक्षतया पदजातं यत्र तद् निरूक्तम्" अर्थात् अर्थ जानकारी के लिये स्वतन्त्र रूप से जो पदों का संग्रह है वही निरूक्त कहलाता है।

दुर्गाचार्य का कहना है कि अर्थ का परिज्ञान कराने के कारण यह अंग इतर वेदाङ्गों तथा शास्त्रों में प्रधान है – "प्रधानं चेतमितरेभ्योऽङेभ्यः सर्वशास्त्रेभ्यश्च अर्थ परिज्ञानाभिनिवेशात्।" षड्वेदांगों में निरूक्त वैदिक शब्द कोष निघण्टु की व्याख्या है। निघण्टु में पॉच अध्याय है। उनमें प्रथम तीन अध्याय निघण्टु पदों का वर्णन, चतुर्थ अध्याय में एक पदिक अनेकार्थक पदों का वर्णन और पञ्चम अध्याय में देवता विषयक पदों का वर्णन मिलता है। विभागों के अनुसार ही अध्यायों का नामकरण हुआ है जैसे जहॉ निघण्टु पद हो वह नैघण्टुक काण्ड, जहॉ एक पद अनेकार्थक हो वह नैगम काण्ड और जहॉ देवताओं का वर्णन हो वह दैवतकाण्ड कहा जाता है। अतः निघण्टु तीन काण्डों में विभक्त है– नैघण्टुक काण्ड, नैगम काण्ड और दैवत काण्ड। ऐसे ही विषय को आधार करके परिशिष्ट सहित चतुर्दश अध्यायात्मक निरूक्त की रचना यास्क मुनि ने की। निघण्टु विषय का उसी क्रम से स्वयं निरूक्त ग्रन्थ की व्याख्या की।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

प्रथम तीन अध्याय को निघण्टु काण्ड, इसके मूल में निघण्टु के 1341 पद है। उनमें 350 पदों की सम्पूर्ण व्याख्या चौथे, पॉचवें, छठें, अध्याय में की। तृतीय काण्ड में 151 देवता विषयक पद है।

निष्कर्ष –

निरूक्त वेद के अर्थ को जानने के लिए नितान्त आवश्यक है। यह व्याकरण–शास्त्र का पूरक है। देवतागत पदो के ज्ञान के लिए निरूक्त के दैवतकाण्ड का ज्ञान अति आवश्यक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः–

1. आपस्तम्ब की यज्ञ परिभाषा – ऋग्वेद, परिभाषा संख्या –31
2. वैदिक साहित्य का इतिहास – कपिल देव द्विवेदी, पृ0सं0 84–85
3. महाभारत का शान्ति पर्व – वेदव्यास, पृ0सं0 104–238
4. संस्कृत का वृहद् इतिहास (वैदिक खण्ड) – बलदेव उपाध्याय, पृ0सं0 428–429
5. वैदिक साहित्य का इतिहास – उमाशंकर शर्मा (ऋषि), पृ0सं0 89–94
6. पाणिनीय शिक्षा – ऋग्वेद
7. निरूक्त पञ्चाध्यायी – यास्क, पृ0सं0 201–256
8. ऋग्वेद भाष्य भूमिका – सायणाचार्य

RRIJM 2015, All Rights Reserved